نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ

اَفْضَلُ الذِّكْرِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

न पूंछ इन खर्कापोशों की 'इ़रादत हो तो देख इनको,
यदे बैज़ा लिए बैठे हैं अपनी आसतींनो में ।

पीरे कामिल

मोवल्लिफ

खाकपाए पीर फेहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी
अल चिश्ती इफ्तेखारी मारूफ पीर अफ़ी अन्हु

तर्जुमा : खाकपाए पीर मारुफ
प्रोफेसर मोहम्मद सलीम चौधरी कादरी B.Sc., B.Ed., M.A. (Education)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّی عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم

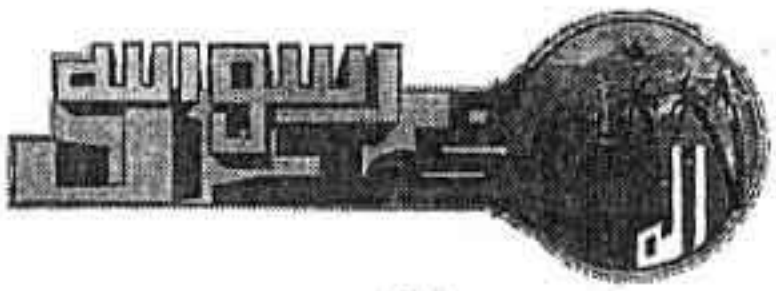

पीरे कामिल

मोवल्लिफ

खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी

अल-चिश्ती इफ्तेखारी **मारूफ पीर** अफी अन्हो

तर्जुमा : खाकपाए पीर मारुफ

प्रोफेसर मोहम्मद सलीम चौधरी कादरी B.Sc.,B.Ed.,M.A.(Education)

मिनजुम्ला हुकूक बहक्के मुसन्निफ महफूज हैं

अरकान

नामे किताब : पीरे - कामिल

मोल्लिफ : ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी अल-चिश्ती हफ्तेखारी मारूफ पीर ।

नोइय्यते अशाअत : बारे - अव्वल

तादादे अशाअत : 500

मुकामे अशाअत : हाल खुर्द, खालापुर-रायगड,

तारीखे - अशाअत : 25 नवम्बर, 2007 बमुताबिक 14 जिल्कद 1428 हिजरी

कीमत : 25 रूपये

कम्प्युटर कंपोझीग व प्रिटींग : डीसेंट आर्ट, मोबाईल : 9867914724

किताब मिलने के पते

हजरत पीर फहमी

खानकाहे कादरी अलचिश्ती, आदिल फहमी नवाजी,
आदिल नगर, आकाशवाणी, गेट नं. ७, मालवणी कालोनी,
मलाड(वेस्ट), मुंबई - ९५. फोन नं. २८८१९४०१

अब्दुल्लाह शाह कादरी

गरीब नवाज नगर, कोकरी आगार, एस.एम. रोड, अॅन्टॉप हिल,
मुंबई - ४०० ०३७.

फेहरिस्त

मजमून	पेज नं.
इन्तेंसाबे	4
सय्यदना गौस पाक र. अ. की बशारत	5
हजरत ख्वाजा गरीब नवाज र. अ. फरमाते हैं	5
बैत का माना	6
बैत क्यों ?	9
पीरे कामिल के जरूरत	13
आदाबे मुर्शिद	17
आदाबे मुर्शिद व महबुबे इलाही र. अ.	19
आदाबे मुर्शिद व हजरत मखदुम अशरफ शाह जहाँगिर समनानी र.अ.	19
बेअदबी का अंजाम	20
सोहबते - मुर्शिद	20
खिदमते मुर्शिद	22
पीर की दस्त गोसी व कदम बोसी	23
पीर व मुर्शिद की ताजीम में खड़ा होना	25
पीर व मुर्शिद की खिदमते आलिया में नजर पेश करना	27
तसव्वुरे शेख	29
तसव्वुरे शेख व बंदा नवाज र.अ.	31
तसव्वुरेशेख व शाह वली अल्लाह मोहद्दिस देहलवी र.अ.	32
तसव्वुरे शेख में नमाज	32
तसव्वुरे शेख और आलाहजरत	33
फनाफिल शेख	34
मर्दो की की बैत का जवाज	34
औरतो की बैत का जवाज	36
नाबालिग बच्चो की बैत का जवाज	37
क्या साहिबे मज़ार से बैत दुरुस्त है?	37
मशायखे उज्जाम का कफन	38
मशायखे उज्जाम को अमामे के साथ दफन करना नाजायज है?	38
शजराख्वानी के फवायद	39

इन्तेसाब

نَحْمَدُه وَ نَصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْم

लाखों एहसान व शुकर उस रब्बे कायनात का करोडो दरूदो - सलाम आकाए नामदार मदनी ताजदारे अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफा स. अ. व. पर व सद - दर - सद अहसान व शुकर महबूबे सुब्हानी शेख अब्दुल कादर जीलानी व ख्वाजाए ख्वाजगॉ ख्वाना मुइनुद्दीन चिश्ती व तमामी अवलिया व मशाखिन रिज्वान अल्लाह तआला अजमइन का । इन्सानी जिंदगी की असल गायत यही है कि वह तरककी करके अपने मुगदा असली यानी हक से वासिल हो जाए । हर वक्त अपने ख्याल को मकसूदें आला की तरफ मुतवज्जा रखें । इंसान के लिए इससे बढ़कर कोई नेएमत नहीं । रूहानी तरक्की के वसायल खुद इंसान के अंदर मौजुद हैं ।

इंसान खुदा का मजहरे अतम है । इसलिए वह काबिलियत रखता है कि सिफाते बशरी को फना करके खुदा मे मिल जाए और खुदा के सिफात हासिल करके बका के मरतबा को पहुँचे । रसूल व पैगम्बर अ.स. खुदा के मजहरे खास होते है । हुसूले मारफत के लिए इंसान को मुख्तलिफ जराए से गुजरना पड़ता हैं । अंबिया अलै - सलाम इसी मकसद की तबलीग और उन्ही जराए की तालीम के लिए माबूस हुए । औलिया अल्लाह उन्ही की नियाबत फरमाया करते हैं, उसी नियाबत और खिलाफत में रमूजे बातनी व फयूजे - रब्बानी पोशीदा हैं । मेरे आका व मौला पीर रोशन जमीर हजरत ख्वाजा शेख मोहम्मद अब्दुल रऊफ शाह कादरी अल-चिश्ती इफतेखारी पीर फहमी मद जल्लहू आली ने उन्ही रमूज से आगाही बखश कर खिलाफते कादरिया आलिया खुलफाइया व खिलाफते चिश्तिया बहिश्तिया से सरफराज फरमा कर मसनदे रूशद - व - हिदायत पर फायज किया । उसी रूशद - व - हिदायत के जमन में किताबे हाजा पीरे - कामिल है । जो मैं अपने पीर व मुर्शिद की बारगाहे विलायत में नजर करता हूँ ।

गर कुबूल इफतदज है इज्जो शरफ

खाकपाए पीर फहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी अलचिश्ती इफ्तेखारी मारूफ पीर अफी अनहो ।

सय्यदना गौसे पाक (र.अ.) की बशारत

مُرِیْدِیْ لاَ تَخَفْ اَللّٰہُ رَبِّیْ
عَطَانِیْ رِفْعَۃً نِلْتُ الْمَنَالِیْ

सय्यदना गौसुल आजम दसतगीर पीराने पीर रोशन - जमीर फरमातें हैं अल्लाह तआला ने मुझे एक लिखा हुआ दफ्तर (रजिस्टर) दिया जिसमे कयामत तक आने वाले मेरे अहबाब व मुरीदो के नाम दर्ज थे और अल्ला तआला ने फरमाया कि इन सबको तेरी वजह से बखश दिया । नेज आपने फरमाया के मैंने दरोगाए जहन्नम से जिनका नाम मालिक है दरयाफ्त किया, मेरे मुरीदो में से तुम्हारे पास कोई है, जवाब दिया, इज्जत परवरदिगार की कसम कोई भी नहीं, देखो मेरा दस्ते हिमायत मेरे मुरीदो पर ऐसा है जैसे आसमान जमीन के ऊपर, अगर मेरा मुरीद, अच्छा नहीं तो क्या हुआ मैं तो अच्छा हूँ, जलाले परवरदिगार की कसम. जब तक मेरे तमाम मुरीद बहिश्त में नहीं चले जाएँगे मैं बारगाहे खुदावंदी में नहीं जाऊँगा । और अगर मशिरक में मेरे एक मुरीद का परदाए उफ्त गर हो रहा हो और मैं मगरिब में हूँ तो यकीनन मैं उसकी परदापोशी करूँगा । अल्लाह तआला ने अपने फजलो करम से वादा फरमा लिया है कि मेरे मुरीदो, सिलसिलेवालो, मेरे तरीक का इत्तबा करनेवालो और मेरे अकीदत मंदो को जन्नत में दखिल फरमाएगा। (शेख अब्दुल हक मोहदिदस दहेलवी, अखबारूल अगयार, पेज नं. ४९)

हजरत ख्वाजा गरीब नवाज र. अ. फरमाते हैं

कयामत के दिन अवलियाए सिद्दकीन और मशायखे उज्जाम रिजवान अल्लाह तआला अजमइन को जब कबरो से उठाया जायेगा तो उनके कंधो पर चादरे पड़ी होगी और हर चादर के साथ हजारो रेशे लटकते होंगे । उन बुर्जुगो के मुरीद और अकीदतमंदो उन रेशो को पकड़कर लटक जाएगे और उन बुर्जुगो के साथ पुल सिरात पार करके जन्नत में दाखिल हो जाएगें । (दलीलुल आरफीन)

बैत का माना

बैत बय्य से मुशतक हैं । बय्य के असल मानी मोल लेने या बेचने के हैं और मुबायत के मानों में भी मुसतमिल हैं । ये कलमा अपने वसी मफहूम के लिहाज से कई माना देता है । बैत या मुबायत के लगवी (लफ्जी) माना अहद व पैमा के निकलते हैं । जबकि इस लफ्ज से मजबूती से बाँधना, खरीद व फरोख्त, लेन-देन, मुहकम पैमान, अताअत, मुरीद होना और शागिर्द होना मुराद लिया जाता है। बैत के मुतारूफ अल्फाज, मुआहदह, वादा, पक्का अहद और मिसाक हैं । बकौल अल्लामा इब्ने मन्जूर साहब लिस्सानुल अरब शाराअल खामोस : गोया बैत करनेवाला सब कुछ मुर्शिद के हवाले करके उन से फैज मोल लेता हैं । कुरान करीम में बैत या मुबायतह, अहद, वादा और मिसाक के सारे अल्फाज कसरत से मिलते हैं । कमोबेश एक ही मतलब अदा करनेवाले ये अल्फान मुख्तलिफ जगहो पर अलग-अलग मौजुआत के तहत इस्तेमाल हुए हैं ।

हक तआला ने नबी आदम (अ.स.) की पुश्तों से उनकी नसलों को निकाला था,और पूँछा था, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ? क्यों नहीं, सब ने कहा, हम गवाही देते है तूही हमारा रब हैं । (सूरह अएराफ, आयत १७२ और ये वाकिया तखलीके आदम अ.स. के वक्त पेश आया था । अल्लाह तआला ने पूरी नस्ल आदम को बैक वक्त वजूद व शऊर अता करके उनसे अपनी रबुबियत की शहादत ली थी गोया ये मखलूक की अपने खालिक से वफादारी का पहला इकरार व पैमा था, इसी को मिसाके अजल से ताबीर किया जाता है।

तमाम अंबिया अ.स. से भी अहद लिया गया कि अपने बाद आनेवाले नबी आखिरूजमा सलललल्लाहू अलैह व वसल्लम की तसदीक और मआवनत की जाए । (सूरह अल इमरान, आयत ८१)

कोहे तूर के दामन में बनी इसरायल के नुमाइंदो से अहद लिया

गया था कि दरवाजे में सजदारेज होते हुए दाखिल हो, हमने उनसे कहा की सबूत का कानून न तोडो और इस पर उन से पुख्ता अहद लिया (सूरह निसा आयत १५४) ये अहद मिसाके तूर से मारूफ हैं ।

कुरान हकीम ने बनी इसराइल से लिए गए अहदों का मुत्तद मुकाम पर जिकर फरमाया है । सूरह मायदा में इसाइयो से लिए गए अहद के मुताल्लिक फरमाया गया इसी तरह हमने उन लोगो से भी पुख्ता अहद लिया था जिन्होने कहा था हम नसारा हैं । (सूरह मायदा, आयत - १४)

कुरान हकीम ने ईमान को अब्द व रब के दरमयान कायम होनेवाले अहद का नाम दिया है । (सूरह तौबा आयत - १११)

कुरान हकीम में सैकड़ो बार अल्लाह तआला के वादा के हक्कानियत और सदाकत का जिकर मिलता है । हुजूर अकरम स. अ. व. सल्लम के दस्ते मुबारक पर बैत करनेवालों के हाथो पर अल्लाह तआला का हाथ होने का सरीह ऐलान सूरह फतेह में मौजूद हैं । (आयत - १०)

इस बैत से मुराद बैते रिज्वान है जो हुदैबिया में हुजूर अकरम स.वंसल्लम ने तमाम मुहाजिरीन व अन्सार से ली थी ये बैते जिहाद थी । इस इरशादे कुरानी से अजमते रसूल स. अ. व. का एक नुरानी पहलू उजागर होता हैं कि हुजूर स. अ.व. को कुर्बे इलाही में वह मुकाम हासिल है कि हुजूर स. अ.व. से बैत, रब्बुलआल्मीन से बेत है और हुजूर स. अ.व. का बस्ते अकदस गोया दस्ते खुदावंदी है । हुदैबिया में बैत करनेवालो को रजाए इलाही का तमगा हासिल हुआ, ये बैत एक कीकर (बबूल) के दरख्त के नीचे ली गई थी । (सूरह फतेह, आयत - १८)

इससे पता चलता है कि इमान व इस्लाम के अलावह दीगर उमूर पर भी बैत होती है । मसलन हुदैबिया में ली गई बैत, बैते इस्लाम न थी बल्कि बैते जिहाद थी लिहाजा आमाल, तकवा, तौबा, वगैरह पर भी बैत हो सकती हैं ।

अंबिया अलैसलाम का अपनी कौमो को हक और भलाई के लिए बुलाना । दावते ईमान और उम्मतो का उनकी दावतो पर लब्बैक कहकर उसको कुबूल कर लेना ही इस्तलाहन ईमान लाना है । तौहीद व रिसालत का यकीन और उसका इजहार शऊरी सुपुर्दगी की अलामत, और फरायज व अहकाम की पाबंदी का अहद बजाए खुद अताअत व फरमा बरदारी का निशान बन जाता हैं जिसे अरफन बैत या मुबायत का नाम दिया जा सकता है।

फारान की चोटी से जब हादी बरहक ने पहली बार सदाए तौहीद बुलंद की थी तो मर्दो में से पहले हजरत अबूबकर सिद्दीक र. अ. ने, औरतो में से सबसे पहले हजरत उम्मुल मोमीनीन हजरत बीबी खदीजा र.अ. और बच्चों में सबसे पहले हजरत अली मुर्तजा र.अ. ने ईमान लाकर अपने बैते इस्लाम का इजहार किया था ।

बैत के अकसाम के बारे में उल्मा मुख्तलिफ नुकात नजर के हामिल हैं ताहम बैते ईमान, बैते इस्लाम, बैते उक्बा, बैते जिहाद, बैते रिज्वान, बैते तकवा, बैते तौबा, बैते आमाल, बैते तरबियत, बैते इलम, बैते इरादत, बैते तरीक, बैते खिलाफत, बैते वली अहदी, बैते अताअत और बैते इमामत और बैते अमानत मशहूर हैं ।

बैत पैमाने अताअत है । बैते कामिल सुपुर्दगी और तसलीम व रजा का इजहार है । ये जब पैमाने अताअत का मुआहिदा है तो इसको मजबूत बनाने के लिए बैत करनेवाला अपना हाथ बैत लेनेवाले के हाथ में दे देता है । बैत का फेल लेन देन के फेल से मुशाबा होता है यानी बैत करनेवाले अपने अख्तियारात उसके हाथ बेच दिए जिससे बैत करली है । इसलिए बैत को बैत कहा जाता है । (मुकदमा इब्ने खुल्दुन)

बैते रिज्वान के मौके पर हुजूर स.अ.व. ने अपना बाँया हाथ उठाकर फरमाया कि या अल्लाह ये उसमान र. अ. का हाथ है और दायां हाथ उठाकर ये मुहम्मद रसूल अल्लाह का हाथ हैं । आपने अपने दाए हाथ

पर बाँया हाथ रखकर हजरत उसमान र. अ. की बैत की तकमील फरमाई। इससे साबित होता है कि बवक्ते बैत हाथ में हाथ दिया और लिया जाता है । इसी वजह से हक तआला ने हुदैबिया में बैत करने वाले सहाबा के मुतालिक इरशाद फरमाता है कि ऐ महबूब जो तुम्हारी बैत करते हैं वह अल्लाह ही से बैत करते हैं । उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ हैं । (सूरह फतेह, आयात - १०)

लिहाजा मुसाफा बैत की रसम के लिए सुन्नते रसूल स.अ.व. ही नहीं बल्कि खुशनूदी खुदा का बाइश भी हैं । (फतवायेरिजविया)

हजरत शाह अब्दुल अजीज देहलवी र.अ. बैत के बारे में इरशाद फरमाते हैं कि मुरीद अपना अकीदत का हाथ मुर्शिद के हाथ के साथ मुनाकिद करता है । और ये इनेकाद मुर्शिद के दस्ते से इस के मुर्शिद के साथ होता है और आला हाजलकयास यक के बाद दिगरे ये इनेकाद हजरत अली करमल्लाहू वजहूल्करीम के साथ हो जाता है और बावास्ता हजरत अली र.अ. के इस बैत का इनेकाद हजरत नबी करीम स.अ.व. के साथ हो जाता हैं । (फतावा अजीजियानं. पेज८३)

बैत क्यों ?

हुजूर नबी करीम स.अ.व. से बैत का जवाज कुरान मजीद व हदीस मुबारबा से रोशन है । आप के बाद आपके खुल्फाए राशदीन जब बैते खिलाफत लेते थे तो इसीमे बैते तौबा शामिल होती थी क्योंकि उस वक्त में अहले तसव्वुफ खरकाए दीनी को कायम मुकाम हासिल था । खलीफये वक्त के अलावा दूसरे सहाबा कराम बसबब खौफ फूट पड़ने के और इस खौफ से भी कि कहीं बैत करने वालो के साथ बैते खिलाफत का गुमान किया जावे तो फितना व फसाद का बाइस हो । इसलिए बैत न लेते थे । फकत सोहबत पर इक्तफा होता था । जब खुल्फाए राशदीन का दौर खतम हुआ

और खिलाफत का मामला उमरे मुमलीकत के इन्तेजाम और नजम व नुस्कतक सिमटकर रह गया तो सल्फे सालहीन ने बैत वाली सुन्नत को फिर से जिन्दा किया - अल्हमदोलिल्लाह आज भी ये सुन्नत उम्मत में जारी व सारी हैं ।

बैत की शरई हयसियत और इसकी तरगीब की वजाहत इन इ. रशादाते मुबारका से होती है जिसमें ताकीद फरमाई गई है कि जिसने इमाम के हाथ पर बैत किए बगैर रेहलत की उसकी मौत जाहिलियत पर हुई । (हदीस शरीफ)

अल्बत्ता अमातुन्नास पर इमाम की अताअत वाजिब है, कुरान में इरशाद है. अल्लाह की अताअत करो। अल्लाह के रसूल की अताअत करो और अपने अरबाबे अमर (इमाम का खलीफा) की अताअत करो । (सूरह निसा, आयत - ५९)

जिस तरह इमाम का तकर्रूर वाजिब है इसी तरह इमाम के हाथ पर बैत और अताअत भी वाजिब हैं । बैते सुगरा सूफिया व मशायख के हाथ पर उलूमे तरीकत की गरज से की जाती हैं । हजरत शाह वली अल्लाह मुहदिदस देहलवी र.अ. ने इस बैत को बैते सुन्नत बताया है क्योंकि असहाबे रसूल अल्लाह स.अ.व. ने इस बैत के जरिए तकर्रूब की मंजिले तै की थी। कौलुल जमील शिफाउल अलील पैज नं. १९)

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍ بِاِمَامِهِمْ

तर्जुमा :- जिस दिन हम हर जमात को उस के इमाम के साथ बुलाएंगे । (सूरह बनी इसराइल, आयत नं. ७१)

हजरत इब्ने अब्बास र.अ. ने फरमाया इस से वह इमामुज्जमाँ मुराद है जिसकी दावत पर दुनिया में लोग चले ख्वाह इसने हक की दावत की हो या बातिल की । हासिल ये है कि हर कौम अपने सरदार के पास जमा होगी जिसके हुक्म पर दुनिया में चलती रही और उन्हें उसी के नाम से पुकारा जाएगा कि ऐ फलां के मुताबियन ।

खजायनुल इरफान फि तफसीरूल कुरान में हजरत मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी र.अ. लिखते हैं - इससे मालूम हुआ कि दुनिया में किसी सालेह को अपना इमाम बना लेना चाहिए । शरियत में तकलीद करके और तरीकत में बैत करके ताकि हशर अच्छों के साथ हो । अगर सालेह इमाम न होगा तो इसका इमाम शैतान होगा । इस आयत में १) तकलीद २) बैत और मुरीदी सबका शबूत हैं । हजरत बायजीद बुस्तामी र.अ. फरमाते है जिस का कोई पीर नहीं उसका इमाम शैतान हैं । (अवारिफुल आरिफ)

हजरत अबुलकासिम कशीरी र.अ. फरमाते हैं कि मुरीद के लिए अगर कौई पीर न हो जिससे एक साँस पर रास्ता सीखे तो वह अपनी ख्वाहिशे नफ्स का पुजारी है राह न पायगा । (रिसालये कशीरिया)

हजरत अबु यजीद र. अ. फरमाते है जिस का कोई पीर नही उसका पीर शैतान हैं । (बहवाला फतवा - अफरीका, पेज नं. १३९)

आला हजरत शाह अहमद रजा खॉ बरेलवी र.अ. फरमाते है - कुरान व हदीश में शरीयत, तरीकत और हकीकत सब कुछ है और इनमें सबसे ज्यादा जाहिर व आसान शरियत के मसायल हैं और उन आसान मसायल का ये हाल है कि अगर आयमाए मुजतहदीन के अकवाल की तशरीह न करते तो अवाम आयमा के इरशादात समझने से भी आजिज रहते। जब अहकामे शरीयत में ये हाल है तो फिर वाजेह है कि मुर्शिदे कामिल के बगैर असरारे मारफत कुरान व हदीस से खुद निकाल लेना किस कदर मुहाल है । ये राह सख्त बारीक और मुर्शिद की रोशनी के बगैर सख्त तारीक है । बड़े - बड़ो को शैताने लईन ने इसी राह में ऐसा मारा कि तहतुसरा तक पहुँचा दिया । तेरी क्या हकीकत कि बे रहबर कामिल इसमें चले और सलामत निकल जाने का दावा करे । (निकाए सलाफा फी अहकामुल बैते वल खलाफा)

मुतरजिम व मुफस्सिरे कुरान हजरत शाह अब्दुल माजिद दरियाबादी तहरीर फरमाते है कि असल सवाल सिर्फ ये है कि ईमान के अजजा और इसलाम के अरकान तो किताबो से बेशक दरयाफ्त हो जाते है लेकिन हर

अमल के पीछे जो "रूहे अमल" कारफरमा होती है, वह महज इन किताबी वासतो और नौशतो से क्या पूरी तरह हासिक करली जा सकती हैं ? कल्ब को मर्तबाए एहसान तक पहुँचाना, बातिन का तजकिया, नफ्स का जिलाए इख्लाक की पाकीजगी, आदत व खसलत में इसार, ये सब बगैर एक जिन्दा मुअल्लिम यानी (मुशिर्दे कामिल) की वसातत के अमूमन व आदतन क्यूकर मुमकिन हैं । जो कानून और जाबते किताबों में दर्ज करनवाले थे, वह बेशक बड़ी तहकीक और पूरी तफसील के साथ हदीस व आशार और फीका की किताबों में मदून होते रहे, लेकिन जो चीजे एक कल्ब से बराहे रास्त दूसरे कल्ब में मुनतकिल होने की है, उनके लिए कागज के तोमार और रोशनाई की ढेर, किस हद तक काफी हो सकते है ? हर अमल जाहिर है कि अपनी एक सूरत भी रखता है और एक रूह भी । फीका का ताल्लुक सूरते अमल से है और सुलूक व तरीकत का ताल्लुक रूहे अमल से हैं । (तसव्वुफे इसलाम, पेज नं. २१४)

आयमा कराम फरमाते हैं, आदमी कितना ही बड़ा आलिम, आमिल, जाहिद और कामिल हो उस पर वाजिब है कि वलिये कामिल को अपना मुर्शिद बनाए कि इसके बगैरे उस को हरगिज चारा नहीं । (तसव्वुफ व तरीकत पेज नं. १०८)

सय्यदना गौसे पाक र. अ. फरमाते है कि शुरु से अल्लाह तआला ने रूहानी तरबियत का सिलसिला इसी तरह जारी फरमाया है कि एक फैज देता है और दूसरा फैज हासिल करता हैं । जैसे अंबिया कराम अलैह सलवातुल सलाम और उन के जानशीन फिर उन के तरबियत याफता, व आला हाजा कयास । ये सिलसिला कयामत तक जारी रहेगा और इरशादे इलाही ये नामुमकीन है कि खुदा तआला किसी शख्स को तरबियत के बगैर मुकामाते आलिया तक तरक्की दे और न इस पर कोई दलील कायम हो सकती है क्योंकि अकसर यही हुआ है कि सिवाए शेख के कोई शख्स मनाजिले सलूक तै नहीं कर सकता । फिर फरमाया शेख की खिदमत व जरूरत से उस वक्त तक अलग नही होना चाहिए जब तक वसूले इल्लल्लाह यानी

मंजिले मक्सूद तक न पहुँच जाए । (गुन्नतुल तालिबेन, पेज नं. ६१४)

पीरे कामिल की जरूरत

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابْتَغُوْا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِىْ سَبِيْلِهٖ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ.

तर्जुमा : ऐ ईमानवालो अल्लाह से डरो और उस की तरफ वसीला ढूँढो और उस की राह में जिहाद करो और इस उम्मीद पर की फलाह पाओ । (सुरज मायदा आयत - ३५)

इस आयते करीमा की तफसीर में हजरत शाह वली अल्लाह मुहददिस दहेलवी र.अ. अपनी किताब कौलुलजमील में फरमाते हैं कि यहाँ वसीला से मुराद न तो ईमान है क्योंकि ईमानदारों से तो पहले ही खिताब हो रहा है और न ही आमाले सालेह नमाज रोजा, जकात वगैरह बदनी इबादत है, क्योंकि ये तक्वा में शामिल हैं । पस वसीले से मुराद इरादत हैं बैत और मुशिर्दे तरीकत हैं । (कौलुल जमील, शिफाउल अलील पेज नं. ३४)

وَاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَىَّ

तर्जुमा: -उनके रास्ते पे चलो जो मेरी तरफ मुतवज्जा हुए । (सूरह लुकमान आयत - १५)

तफसीरे मुहिब्बुरहमान में इस आयत के तहत फरमाया गया और तु ऐसे शख्स की राह पर चल जो हमातन मेरी तरफ झुका हुआ है । यानी वह अव्वलन पैंगम्बर स.अ.व. और सानियन आप स.अ.व. के सालिहीन उम्मत हैं । (मुहिब्बुरहमान, पेज नं. ८३)

हदीसे मुबारका है कि इंसानपर फर्ज है कि वह पीरे कामिल की तलाश करे और वह करीब मकान और मुल्के अजम में और मुल्के शाम में और वह मुल्के रोम में क्यों न हो ।(बुरहानुल हकायक - पेज नं. २०६)

हुजूर अकरम सं.अ. व. से कबल इजाजते बैत किसी नबी को न थी क्योंकि बादे बैत नबी की हाजत नहीं होती और हुजूर स. अ. व. खातमुनबीन हैं । इस लिए हक तआला ने बैत का सिलसिला शजर के नीचे जारी करने का हुक्म फरमाया।

तर्जुमा : बेशक अल्लाह राजी हुआ ईमानवालो से जब वह इस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैत करते हैं । (सूरह फतेह, आयत-१८)

मसलन जैसे कोई बागबान बाहर से आम के कलम मँगाता है अगर आम की कलम देनेवाला मालिक कहे कि ये आखरी कलम है । इस के बाद कोई कलम भेजी नहीं जाएगी तो बागबान कलम की कमी को पूरा करने केलिए ये तरीका निकालेगा कि देसी आम के पेड़ में कलमी आम की शाख लगाकर बाँध दी जाए तो कलम लग जाने पर वही तुख्मी पेड़ कलमी हो जाएगा और बाहर से मँगाने की जरूरत भी न होगी । इस तरह हुजूर स.अ. व. मिस्ले कलमी आम के थे । उनमें अल्लाह का फल लगा हुआ था और सहाबा कराम मिस्ले तुख्मी आम के थे और उनमें खुदी का फल लगा हुआ था । जब सरकार ने बैत के जरिये कलमी आम के शाख लगाई तो यही सहाबा तुख्मी से कलमी, हैजी से फैजी व फना फिररसूल बन गए और वह हयातुनबी के राज हो गए । वही सिलसिला बैत अब भी जारी है । इसलिए हुजूर स.अ.व. ने फरमाया मेरे बाद अब कोई नबी न आएगा । मेरी उम्मत की जिम्मेदारी मेरे खुल्फाए राशदीन के सुर्पुद हैं । क्योंकि

'عُلَمَآء اُمَّتِی کَانبِیآءِ بَنِی اِسرَائِیلِ' ।

और मेरी उम्मत के उल्माए हक बनी इसराइल के पैगम्बरों की तरह हैं) और वह अंबिया कराम के वारिस हैं ।

'اَلعُلَمَاءَ وَرَثَةُ الاَنبِیَاءَ' और फरमाने आझम हुआ 'اَلشَّیخُ فِیْ قَومِهٖ کَالنَّبِیْ فِیْ اُمَّتِهٖ' शेख अपनी कौम में खुदा की राह उसी तरह दिखलाने वाला है जिस तरह अपनी उम्मत में पैगम्बर अ.स. । ये जाहिर है कि उम्मत को राहे तलब में पैगम्बर के सिवा चारा नहीं तो कौम को

भी बगैर शेख यानी खलीफाए पैगम्बर के चारा नहीं । इसी वजह से हजरात मशायख का कौल है –

'لَادِيْنَ لِمَنْ لَا شَيْخَ لَهُ'

जिस का कोई पीर नहीं उसका मजहब ही नहीं क्योंकि मशायखे उज्जाम की जात बाबरकत पैगम्बरों की नायब है - अलावह अजी मशायख रिजवान अल्लाह अलैहुम अजमईन की किताबो में बकसरत अकली दलील मौजूद हैं । अगर कोई चींटी काबा की जियारत का कसद करले तो अव्वल रास्ता इतना लंबा कि उमर खतम हो जाए - बिल्फर्ज तवील उमर भी हो तो भी राह पूर खतर है । न जाने किसके पैर के नीचे आ जाए, अगर चीटी किसी शेहबाज परिंदे के पैर से लिपट जाए तो आन की आन में बगैर किसी खौफ के वह काबा के छत पर उसे पहुँचा दे । दूसरी बात अकसर रास्ते में चोर डाकू मिला करते हैं । बगैरे मुहाफिज के जाने में लुट जाने का खौफ है । तरीकत की राह में खौफ नफ्से काफिर और असली शैतान और नकली रहबर हैं । बगैर किसी साहिबे दिल या साहिबे विलायत के जाना पूँजी को बर्बाद कर देना हैं । तीसरी बात ये राह में ऐसा सुथराव है कि कदम फिसलते हैं और वह घाटिया और भुल भुलय्या है, कि जान बचाना मुहाल हैं । सैकड़ो फलसफी दहरी और अकसर बंदाए नफ्स बगैरे इम्दादे शेखे कामिल और वासिले बिल्लाह के महज अपनी अकल के भरोसे पर इस राह में चलें और फौरन ही भटक कर दशते पुरखार में ऐसे उलझे कि निकल न सके दोनो-ईमान से बर्बाद होकर रह गए । इसलिए जल्द अज जल्द किसी रहबरे कामिल की तलाश करे और अपने रौजे अजल का कौल । اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى

(क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ, कहा बेशक है) का वायदा वफा करें जिसके लिए अल्लाह तआला ने कुल कायनात हजर, शजर, मलायक, जिन्नात, हैवानात और महबूबे पाक को जाहिर फरमाया (मै एक छुपा हुआ खजाना था - मैने चाहा कि मैं जाना जाऊं, पहचाना जाऊं इसलिए मैने खलक को पैदा किया)

مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ

पीरी मुरीदी का असल मकसद भी अपने इरफान से आगाह होना है ताकि रब की मारफत हासिल हो जाए ।

हजरत सुल्तान बाहू र.अ. फरमाते हैं, ऐसा पीर तलाश करो जो मुरदे को जिंदा और जिंदे को मुर्दा कर दे । फिर खुद ही फरमाते है, अगर जिंदगी भर भी हाथ में सूरज लेकर तलाश करेगे तो ऐसा पीर न पाओगे । मेरा मनशा तुम्हारे मुर्दा दम को मुर्दा सांसो को कलमा तय्यबा से जिन्दा कर दे और तुम्हारे नफ्से अम्मारा को कलमा तय्यब से मुर्दा कर दे ।

किसी कशफ व करामत के चक्कर में न फँसे । मशायख - उज्जाम कशफ - व - करामत को अपने पैरो का जूता समझते हैं ।

اَلْكَشْفُ وَالْكَرَامَاةُ اَلْحَيْضُ النِّسَاءَ

(कशफ और करामत मिसले औरतों के हैज के है) एक दिन हजरत हसन बसरी र.अ. पानी में मुसल्ला बिछाकर राबिाया बसरी से कहा, आओ हम यहाँ नामाज पढ़ते हैं । हजरत राबिया बसरी र.अ. ने हवा में मुसल्ला बिछाकर कहा आओ हम यहाँ नमाज पढ़ते है फिर कहती है हवा में उड़ना ये काम तो एक मख्खी भी कर सकती हैं । पानीपर चलना ये काम एक मछली भी कर सकती है । कामिल पीर तुम्हें शोबदाबाजी करता नहीं मिलेगा । जहाँ कही तुम्हें पीरे कामिल मिल जाए अपनी खुदी अपनी पहचान उस के हाथ पर बेचकर उसकी पहचान ले लेना ।

आदाबे मुर्शिद

"आदाब पहला करीना है मुहब्बत के करीनों में"

اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ

امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبُهُمْ لِلتَّقْوٰی ، لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِیْمٌ

तर्जुमा :- बेशक वह जो अपनी आवाजें पस्त करते हैं रसूल अल्लाह स.अ.व के पास वह है जिनका दिल अल्लाह ने परहेजगारी के लिए परख लिया है उनके लिए बख्शिश और अजरे अजीम हैं । (सूरह हुजरात, आयत- ३)

मुफस्सिरे रूहुलबयान हजरत शेख इस्माइल हक र.अ. फरमाते हैं इस आयते मुबारका में इस बात की तरफ इशारा है कि शेख व मुर्शिद के पास भी आवाजे पस्त रखी जाए क्योंकि मुर्शिद रसूल अल्लाह स.अ. व का वारिस व नायब होता हैं । (तफसीर रूहुलबयान, जिल्द नं. ९, पेज नं. ६६)

१) सय्यदना गौस पाक र.अ. फरमाते है कि मुरीद पर लाजिम है कि जब शेख से आदाब सीखने का इरादा करे तो इसके दिल में इस बात का ईमाने सादिक और ऐतमाद हो कि अपने शेख व मुर्शिद से बेहतर इस जमाने में और कोई नहीं है और शेख की मुखालिफत ना करे क्योंकि शेख की मुखालिफत करेगा तो ये उसके हक में जहरीला बन जाएगा और सिर्फ जाहिर में नहीं बल्कि बातिन में भी खिलाफ करने से दूर रहें । (अम्मादुतुल सुलूक)

२) हजरत अबूअली रूदबारी र.अ. फरमाते है ।

बंदा अदब से खुदा तक पहुँच जाता है और अताअत से जन्नत तक(नजहातुल मजालिस पेज नं. १५१)

३) हजरतजूनून मिसरी अलैरहमा फरमाते हैं । जब कोई मुरीद अदब का ख्याल नहीं रखता तो वह लौटकर वही पहुँच जाता है जहाँ से चला था । (नजहातुल मजालिस, पेज नं. ४३९)

४) हजरत इब्ने मुबारक अलैरहमा फरमाते है कि हमे ज्यादा इल्म हासिल करनेके मुकाबले मे थोड़ा सा अदब हासिल करने की ज्यादा जरूरत है । (नजहातुल मजालिस, पेज नं. १३७)

५) सय्यदना अब्दुल वहाब शेरानी अलैरहमा फरमाते हैं -

मुर्शिद के अदब का आला हिस्सा मुर्शिद की मुहब्बत ही है । जिस मुरीद ने अपने मुर्शिद से कामिल मुहब्बत न रखी बांई तौर के मुर्शिद को अपनी तमाम ख्वाहिशात पर तर्जीह न दी वह मुरीद इस राह में कामयाब न होगा, क्योंकि मुर्शिद की मुहब्बत की मिसाल सीढ़ी की सी है, मुरीद इसके जरिए ही से चढ़ कर, अल्लाह तआला की बारगाहे आलिया को पहुँचता हैं । (अनवारूल कुदसिया फी मारफते कवायदुल सूफिया)

६) हजरत सय्यद अली बिन वफा र.अ. फरमाते हैं कि अल्लाह तआला की राह दिखानेवाला तेरा मुर्शिद एक ऐसी आँख है जिस के जरिए अल्लाह तआला तेरी तरफ लुत्फ और रहमत से देखता है और एक ऐसा मुँह है जिसके जरिए से अल्लाह तआला तेरी तरफ मुत्वज्जा होता है और इसकी रजा से राजी होता है और इसकी नाराजगी से नाराज होता है । पस ऐ मुरीद तू इस बात को जानले और मुर्शिद की अताअत को लाजिम करले और देख ले कि तू क्या देखता है । आगे फरमाते हैं जिस मुरीद ने ये गुमान किया कि इसका शेख इसके असरार से वाकिफ नहीं है तो वह मुरीद अपने शेख से बहुत दूर है । अगरचे दिन रात मुर्शिद के साथ ही बैठा हो ।

७) हजरत शेख जैनुद्दीन ख्वानी फरमाते है कि मुरीद पर वाजिब है कि अपने मुर्शिद से इस्तेमदाद को बाइना रसूल अल्लाह से इस्तेमदाद समझे और रसूल अल्लाह स.अ. व. से इस्तेमदाद को बाइना अल्लाह तआला से इस्तेमदाद समझे ताकि मुरीद इस तरीके से अहले अल्लाह के तरीके को पहुँच जाए ।

८) मुरीद पर लाजिम है कि वह अपने दिल को अपने मुर्शिद के साथ हमेशा मजबूत बाँधे रखे और हमेशा ताबेदारी करता रहे और हमेशा ऐतकाद रखे

कि अल्लाह तआला ने अपनी तमाम इमदाद का दरवाजा सिर्फ इसके मुर्शिद ही को बनाया है और ये इस का मुर्शिद ऐसा मजहर है कि अल्लाह तआला ने इस के मुरीद पर फैजियात के पलटने के लिए सिर्फ इसी को मुईन किया है और खास फरमाया है और मुरीद को कोई मदद और फैज मुर्शिद के वासते के बगैर नहीं पहुँचा । अगरचे तमाम दुनिया मशायख उज्जाम से भरी हुई है ।

आदाबे मुर्शिद व महबुबे इलाही र. अ.

हजरत सुल्तानुल मशायख ख्वाजा शेख निजामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही अपने अहबाब के साथ तशरीफ फरमा थे कि नागाह खड़े हो गए फिर बैठ गए । हाजरीने मजलिस ने आप से दरयाफ्त किया कि हुजूर किस बिना पर खड़े हुए फरमाया कि हमारे पीर दस्तगीर की खानकाह में एक कुत्ता रहता था आज उसी सूरत का एक कुत्ता मुझे नजर आया कि गली मे गुजर रहा था। मैं उस कुत्ते की ताजीम में उठा था ।

आदाबे मुर्शिद व हजरत मखदूम अशरफ शाह जहाँगीर समनानी र.अ.

आप फरमाते है कि बारगाहे इलाही में मकबूलियत का मेरा दर्जा अगर इतेहाई बुलंदी पर पहुँचे कि अर्शे मुअल्ला तक मेरा सर जाए तब भी अपने मुर्शिदे कामिल के आसताने पर ही मेरा सर होगा । (सीरत फखरूल आरफीन पेज नं. १८६)

बेअदबी का अंजाम

हजरत जुनैद बगदादी र.अ. का एक मुरीद आप से नाराज हो गया और यै समझा कि उसे भी मुकामे मारफत हासिल हो गया है । अब इसे शेख की जरूरत नहीं रही । एक दिन वह आपका इम्तहान लेने के लिए आया। हजरत जुनैद बगदादी र.अ. इसके दिल की कैफियत से आगाह हो गये । इसने आप र.अ. से कोई बात पूछी - आप ने फरमाया - लफ्जी जवाब तो ये है के अगर तुने अपना इम्तहान कर लिया होता तो मेरा इम्तिहान लेने न आता। और मानवी जवाब ये है कि मैने तुझे विलायत से खारिज किया - इस जुमले के फरमाते ही उस मुरीद का चेहरा काला हो गया - फिर आप ने फरमाया के तुझे खबर नहीं के औलिया वाकिफे असरार होते हैं । (कशफुल महजूब, पेज नं. २०९)

सोहबते - मुर्शिद

"यक जमाना सोहबत्ते बाअवलिया
बेहतर अज सदसाला ताअते बेरिया ।"

(औलिया कराम की एक घडी की सोहबत सौ साला बेरिया ताअत से बेहतर हैं)

"सोहबते सौलिहा तुरा सौलिहा कुनद
सोहबते सौलिहा तुरा सौलिहा कुनद
सोहबते तलहा तुरा तलहा कुनद."

(नेकों की सोहबत तुझे नेक और बदों की सोहबत तुझे बद बना देती है ।)

يَا يُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ.

तर्जुमा : ऐ ईमानवालों अल्लाह से डरो और सच्चो के साथ हो जाओ ।
(सूरह तौबा, आयत - ११९)

कुरान करीम में इस आयत में उलमा व सौलिहा के बजाय सादिकीन का लफ्ज इस्तेमाल फरमाकर, आलिम व सालिहा की पहचान बता दि के सालिह सिर्फ वही शख्स हो सकता है जिसका जाहिर व बातिन यकसा हो - नीयत व इरादे का सच्चा हो - कौल का भी सच्चा हो - अमन का भी सच्चा हो - साफ जाहिर है के आज के दौर में सादिकीन की मिसदाक मशायखे उज्जाम ही हैं । अल्लाह तआला ने सिर्फ ऐह दिनस सिरातल मुस्तकीम के अल्फाज पर किफायत नहीं की - बल्कि सिरातललजीना अनअमता अलैहिम भी साथ फरमाया - ये इस बात की दलील है के तालिबे राहे मुस्तकीम के वासते ऐसे रहबरे कामिल की सोहबत की असद जरूरत है । जो इसे सीधे रास्ते पर चलाए, गुमराहियों से बचाए,

फितरते इंसानी है के वो नुफूस से जितना असर लेती है नुकूश से इतना असर नहीं लेती । गो के हजराते सहाबा कराम के सामने कुरान पाक की आयत नाजिल । होती थी मगर इसके बावजूद इन पर खशियत व हुजूरी की जो कैफियत नबी, स.अ.व. के हुजूर होती थी वो आपके गैरहुजूरी मे नहीं होती थी । जैसा के हजरत अनस फरमाते है के जिस रोज रसूल अल्लाह स.अ. व. मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाए थे मदीने की हर चीज मुनव्वर हो गई थी और जिस दिन आपका विसाल हुआ तो मदीने की हर चीज तारीक हो गई थी । और हम आपके दफन के बाद मिट्टी भी न झाड़ने पाए थे के हमने अपने कुलूब में तगय्यूर पाया था । पस सहाबा कराम जैसी मुकद्दस हसतियों ने भी तसलीम किया के उन्की जो कैफियत नबी स.अ.व की सोहबत मे होती थी वो बगैर सोहबत के नहीं होती थी । जिस तरह सहाबा कराम मिशकाते नबुव्वत से फैज हासिल किया करते थे आज भी मुरीदाने बासफा अपने मशायख की सोहबत से फैज हासिल किया करते हैं । हजरत अब्दुलाह इब्ने अब्बास र.अ. से रिवायत है आप स.अ.व. से अर्ज की गई के या रसूल अल्लाह हमारे लिए कौन सा हमनशीन बेहतर है । इर्शाद फरमाया वो जिसके देखने से तुम्हे अल्लाह की याद आए जिसके कलाम से तुम्हारी अमल में इजाफा हो और जिसका अमल तुम्हे आखिरत की याद दिलाये ।

हजरत अब्दुल वहा बिन आशिर र.अ. फरमाते है आरिफे कामिल की सोहबत अख्तयार करो । वो तुम्हे हलाकत के रास्ते से बचायेगा । उसका देखना तुम्हे अल्लाह की याद दिलाएगा और वो बड़े नफीस तरीके से नफ्स का मुहासबा

कराते हुए और खतराते कल्ब से महफूज फरमाते हुए तुम्हें अल्लाह तआला से मिला देगा । उसकी सोहबत के सबब तुम्हारे फराइज व नवाफिल महफूज हो जाएंगे । तसबियाहे कल्ब के साथ जिकरे कसीर की दौलत मौयस्सर आयेगी और को अल्लाह तआला से मुतालका सारे उमर में तुम्हारी मदद फरमायेगा । (अलमुर्शदीन मुईन)

खिदमते मुर्शिद

१) हजरत ख्वाजा उसमान हारूनी र.अ. फरमाते हैं जो शख्स अपने पीर की खिदमत कमाहक्का एक रोज बजा लाए अल्लाह तआला उसे बहिशत में एक हजार महल मरवारेदी इनायत फरमायेगा और हजार साल की इबादत का सवाब इस के नामाए आमाल में लिखा जायेगा । (दलीलुल आरफीन, पेज नं. २२)

२) हजरत ख्वाजा गरीब नवाज र.अ. फरमाते है जब मैं शेखूल इस्लाम सुल्तानुलमशायख हजरत ख्वाजा उसमान हारूनी नुरूल्लाह मरकद्दू का मुरीद हुआ तो कामिल २० साल तक खिदमते अकदस में रहा और इस दरजे खिदमत की कि नफ्स को भी कभी आप की खिदमत कीवजह से राहत न दी । न दिन देखता था न रात । जहाँ आप सफर को जाते सोने के कपड़े और तोशा सामान उठाकर हमराह हो जाता । जब आपने मेरी खिदमत और अकीदत देखी तो ऐसी कमाल नेअमत अता फरमाई जिसकी कोई इंतहा नहीं । (दलीलुल आरफीन, पेज नं. २)

३) बाबा फरीद गंज शकर र.अ. फरमाते है कि एक मर्तबा हजरत ख्वाजा बायजीद बुस्तामी र.अ. से पूछा गया कि ये दौलत कहाँ से पाई ? फरमाया - दो बातों से, एक अपनी माँ की खिदमत से, दूसरी अपने पीरो मुर्शिद की खिदमत करने से । (असरारुल अवलिया, पेज नं. ३४)

४) हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन अवलिया महबूबे इलाही फरमाते है जो

खिदमत करता है मखदूम हो जाता है । कोई खिदमत किए बगैरे मखदूम कैसे बन सकता है ? फिर फिरमाया مَن خَدَمَ خُدِمَ यानी जिसने खिदमत की उसकी खिदमत की गई (फवायदुल - फवादिस पेज नं. ३०६)

५) मुरीद पर ये लाजिम है के वह यह ख्याल कभी न लाए कि अब वह अपने मुर्शिद का हक पूरा कर चुका है । अगरचे इस इस मुर्शिद की हजार बरस खिदमत करे और इस पर लाखो रुपया भी खर्च करे और फिर मुरीद के दिल में इतनी खिदमत और इतने खर्च के बाद ये ख्याल आया के अब वह कुछ न कुछ हक अदा कर चुका है तो उसे तरीकत में नाकाबिल तसव्वुर नुकसान पहुँचेगा ।

पीर की दस्तबोसी व कदम बोसी

अवलिया कराम व मशायख उज्जाम रिजवान अल्लाह तआला अजमईन की दस्तबोसी व कदमबोसी या उनके लिए ताजीमन खड़े होना सवाब बाइसे बरकत है । अकसर नावाफिकीन अपनी कचफेहमी व कम इल्मी की वजह से इसे बिद्दत कह देते हैं हालांकि दस्त बोसी व कदम बोसी सहाबा ताबईन रजी अल्लाह तआला अन्हू से साबित है । हदीस शरीफ हजरत जारा र.अ. जो वफद अब्दुल कैस में शामिल थे, वो फरमाते हैं के जब हम मदीना में आए तो जल्दी-जल्दी अपनी सवारियों से उतर पड़े और हमने हुजूर स.अ.व के हाथ पाव का बोसा लिया । (अबूदाऊद, मिशकात पेज नं. ४०२)

इस हदीस के तहत हजरत शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी बुखारी र.अ. तहरीर फरमाते हैं इस हदीस शरीफ से पाव चूमना जायज होना साबित हुआ है। (अशतुलमात जिल्द चहारूम पेज नं. २५)

और अल्लामा इब्ने अली हसकफी दुर्रे मुख्तार बाबुल अस्तबरा में तहरीर फरमाते है - बरकत के लिए आलिम और परहेजगार आदमी का हाथ चूमना जायज हैं ।

और फतावा आलमगिरी जिल्द अव्वल मिसरी ३२१ में है - अगर इल्म और अदल की वजह से आलिम और आदिल बादशाह के हाथ चूमे तो जायज है ।

और हजरत शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी र.अ. अशअतुललमआत जिल्द चहारूम पेज नं. २१ पर तहरीर फरमाते हैं - परहेजगार आलिम के हाथ को चूमना जायज है और बाज लोगों ने कहा के मुस्तहिब है और जो लोग के मुसाफे के बाद अपना हाथ चुमते हैं कोई चीज नहीं, जाहिलो का फेल है और मकरूह है ।

हजरत मौलवी रशीद अहमद गंगोही फतावा रशीदिया में जिल्द, अव्वल किताबुल हजर वाला बाहिस्ता में पेज नं. ५४ में लिखते हैं - ताजीम दीनदार को खड़ा होना दुरुस्त है और पाव चूमना ऐसे ही शख्स का भी दुरूस्त है - हदीस शरीफ से साबित है । दलीले कुरानी :- मुफसरीन कराम ने शायर अल्लाह (अल्लाह की निशानी) की तशरीह करते हुए लिखा है के रसूल अल्लाह स.अ.व. कलामुल्लाह, बैतुल्लाह, जहाँ शायर अल्लाह में शामिल में वहाँ का मलीन अवलिया अल्लाह भी शायर अल्लाह होते है । बल्कि उन कामलीन के जहां कदम लग जाते हैं वह जगहे भी शायर अल्लाह में शामिल हो जाती हैं । इरशादे बारी तआला है ।

اَنَّ الصَّفَاوَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ

तर्जुमा : बेशक सफा और मरवा शायर अल्लाह मे से है ।
(सूरह बकरा, आयत नं. १५८)

हालांके सफा व मरवा की पहाडियाँ तो उस वक्त से मौजूद है जब से दुनिया बनी मगर ये शायर अल्लाह में तब शुमार की गई जब एक नेक बंदी हाजा साबरा के कदमे मुबारक उन पर लगे । मालूम हुआ के कामलीन मकबूलीन के जहां कदम पड़ जाए वह जगहे शायर अल्लाह बन जाती है । तो खुद ये हस्तियां तो बदर्जाए उला शायर अल्लाह होती है । इरशादे बारी तआला है -

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ

तर्जुमा :- और जो शायर अल्लाह की ताजीम करेगा तो बेशक ये (अल्लाह की निशानियो की ताजीम) दिलो की परहेजगारी से हैं ।

(सूरह हज, आयत- ३ २)

वह मुल्लाए खुश्क जो अहले अल्लाह को अपने पर कयास करते है और जिन्हें बदगुमानी और बदजुबानी से फुरसत नहीं उनके लिए लमहा फिकर ये है - ऐसी तौहीद के अदब का दामन ही हाथ से छुट जाए अफरात व तफरीत में दाखिल हैं - मोहिद होने के साथ - साथ मोवदिदब होना ही कमाले ईमान की दलील हैं ।

हिकायत : एक दफा अबू सईद अबुल्खैर र.अ. किसी रास्ते में सवार जा रहे थे के एक मुरीद सामने आया और ये मुरीद पैदल था । उसके शेख के घुटने को चूमा शेख ने फरमाया के और नीचे - मुरीद ने घोड़े के घुटने को बोसा दिया - शेख ने फरमाया - और नीचे - मुरीद ने घोड़े के सुम को बोसा दिया - शेख ने कहा और नीचे मुरीद ने जमीन चूमी इस वक्त शेख ने इरशाद फरमाया के ये जो मैं तुझ से कहता जाता था और नीचे और नीचे तो उससे मेरा मकसद जमीन चुमाना नहीं था बल्कि ये था के तू जितना झुकता जाता था तेरा दर्जा उतना बुलंद होता जाता था ।

(फवायदुल फवायद-पेज नं. ४९१)

पीर व मुर्शिद की ताजीम में खड़ा होना

जब शेख खड़ा हो तो मुरीद भी खड़ा हो जाए और जब शेख बैठे तो मुरीद भी बैठ जाए क्योंकि ये इकराम में दाखिल है । मगर बाज हजरात ऐतराज करते हैं के एक हदीस शरीफ में हुजूर अकरम स. अ.व. ने सहाबा कराम र.अ. को खड़ा होने से मना फरमाया तो फिर मशायख उज्जाम की मजालिस में लोग किसी के इकराम के लिए क्यों खड़े होते हैं? तो इसका

जवाब ये है कि शरीयते मुहम्मदीया का ये हुस्न है के जहां किसी मामले में दो फरीक हो तो दोनो को एक दूसरे के हूकूम की तलकीन की जाती है ताकि मुआमलात खुश असलूबी से चलते रहें । दोनो में मुहब्बत व प्यार और इकराम व तकरीम का रिस्ता अस्तवार रहे । शरीयत ने एक तरफ तो मुरीद को खड़े होने का हुक्म दिया ताकि बुर्जुर्गो की इज्जत अफजाई हो और दूसरी तरफ बुजुर्गो को हुक्म दिया के लोगो के खड़े होने को पसन्द न करे ताकि तकब्बुर से बच सके । पस मुरीद खड़े होने का फर्ज मनसबी समझे और मुर्शिद मुहब्बत व प्यार से बैठने की तलकीन करता है - ताकि मुहब्बत व अकीदत का बंधन सलामत रहे ।

दलायलहदीस :- खड़े न होने की तो अहादीस मशहूर हैं - पर यहाँ खड़े होने के बारे में दो अहादीस पेश की जाती हैं -

१) हदीस शरीफ - इमाम निसाइ र.अ. और इमाम अबू दाउद र.अ. हजरत अबू हुरेरा र.अ. से रिवायत करते है के हुजूर अकरम स.अ.व. । हम से गुफतगू करते फिर आप स.अ.व. खड़े होते तो हम भी खड़े हो जाते ।

२) हदीस शरीफ :- इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम र.अ. रिवायत करते है के हजरत साद बिन माज र.अ. तशरीफ ला रहे थे जब करीब आ गए तो हुजूर अकरम स.अ.व. ने अन्सार से कहा । "قوموا السید کم"

(अपने सरदार के लिए खडे हो जाओ) पस सहाबा कराम र.अ। उनके इकराम के लिए खडे हो गए । (बुखारी व मुस्लिम शरीफ) नबी करीम स.अ.व. के इसी हुकम के पेशे नजर मुरीद अपने सय्यदी व मुर्शदी के लिए खड़े होते हैं ।

पीर व मुर्शिद की खिदमते आलिया में नज़र पेश करना

नजर की दो किस्में हैं, फकी और उरफी नजरे फकी के माना है गैर जरूरी इबादात को अपने लिए जरूरी कर लेना । और नजरे उरफी के माना है नजराना, हदिया और नियाज । नजरे फकी: खुदा ये तआला के सिवा किसी की मानना जायज नहीं और नजरे ऊरफी जो बुर्जुगाने दीन के लिए उनकी हयाते जाहरी या हयाते बातनी में पेश की जाती हैं जायज हैं । हजरत शाह रफीउद्दीन साहब रिसालए नजवर में तहरीर फरमाते है - लफ्ज नजर जो के यहाँ मुस्तअमिल होता है - शरई माने पर नहीं है इसलिए के अरफ में जो कुछ बुर्जुग़ो के यहां ले जाते है नज़रो नियाज़ कहते हैं ।

तर्जुमा: ऐ ईमानवालो जब तुम रसूल अल्लाह स.अ. व. से कोई बात आहिस्ता अर्ज करना चाहो तो अपनी अर्ज से पहले कुछ सदका (नजर) दे लो । ये तुम्हारे लिए बेहतर और बहुत सुथरा है फिर अगर तुम्हें मकदूर न हो तो अल्लाह बखशनेवाला मेहरबान है ।

(सुरह मुजादिला, आयत-१२)

हजरत इब्ने अब्बास रजी अल्लाह तआला अन्हू फरमाते हैं - जब सय्यदे आलम स.अ.व. की बरगाह में मालदारे अरज व माअरूज का सिलसिला दराज किया और नौबत यहा तक पहुँच गई के फुकरा को अपनी अर्ज पेश करने का मौका कम मिलने लगा तो अर्ज पेश करनेवालो को अर्ज पेश करने से पहले सदका (नजराना) देने का हुकुम दिया गया और इस हुकुम पर हजरत अली र.अ.ने अमल किया एक दीनार सदका (नजराना) करके दस मसायल दरयाफ्त किए । (मदारिक व खाजिन)

इस आयत से पता चला के जो मजाराते अवलिया पर तसद्दुक के लिए शीरनी वगैरह ले जाते है जायज है ।

सूफिया कराम पर ऐतराज करनेवालो इस आयते मुबारका के शाने नुजूल पर गौर फरमाइए - इसी सुन्नते मुबारका को सूफिया कराम ने जिंदा रखा है।

बुर्जुगाने दीन का कौल है के बारगाहे इलाही में भी खाली न जाओ क्योंकि जो खाली जाता है वह खाली ही लौटता हैं ।

सवाल : मशायखे, उज्जाम क्यों रिज्क कमाने से परहेज करते हैं ?

जवाब : इस की वजह ये है कि उन्होने ऐसा काम अख्तियार कर लिया था - जिसे अहम तरीन बुलंद तरीन और शरीफ तरीन मशगलों कहा जाए तो बेजाना होगा रसले खुदा स.अ. व. की तरह उन्होने हिदायते खल्क और इस्लाहे उम्मत जैसी अहम तरीने और बुलंद तरीने जिम्मेदारी अपने सरों पर ले ली थी और ये वह काम था जो पूरा वक्त पूरी हिम्मत और पूरी तवज्जो का मोहताज था - अगर मशायख उज्जाम खल्के खुदा की तालीम व तरबीयत के साथ रोजी कमाने में भी मसरूफ होते तो वह अपने मकसद में कभी कामयाब न होते इस वास्ते जिस तरह आहजरत ने जबरदस्त कुरबानी देकर अपनी जरूरियत को बालाए, ताक रखा और फकर व फाका में जिंदगी बसर करके इस्लाहे उम्मत का अहम फरीजा अंजाम दिया बईना इसी तरह मशायख उज्जाम ने फकर व फाका को नाज निएमत पर तरजीह दी अपने आप को बाल बच्चो को भूखो मारा, मुखालिफीन की तअन व तशनअ बरदाशत की लेकिन हिदायते खल्फ के कामको न छोडा । अगर मुअतरजीन के दिल में जराभर इंसाफ हो तो उनको उलटा मशायख उज्जाम की इन कुरबानियो और काबिशो को सराहना चाहिए के जब बाकी लोग दोनो हाथो से दौलत जमा करने में मशगुल होते थे तो ये खासाने खुदा जंगली फूलो, सुखे टुकडों पर गुजारा करके नबुव्वत की तालिमात की नशर व अशाअत और सालिकान राहे खुदा की रूहानी तरबियत में, हमतन और हमावक्त मसरूफ होते थे । चूनांचे ये उनकी अजीमुश्शान कुरबानी थी न के काहिली और बेकारी के इमलाक और कोठिया बनाने की बजाए उन्होंने लोगो के किरदार बुलंद करने इस्लाह नफ्स करने और इनको खुदा रसीदा करने के

लिए जिंदगी काफ करदी थी और इस का नतीजा क्या निकला - इस का नतीजा ये जाहिर हुआ है कि जहा दुनिया दूँ के तालिबो की कमाई हुई दुनिया ने इनको फितना व फसाद में मुबितला किया और आपस में लड़ मरकर बिखेर दिया - इन दुरवेशियों और फुकर व फाका पर कनाअत करके अवाम की इसलाह करनेवालो ने इस्लाम की जड़े लोगो के दिलो में इस कदर मजबूत करदी कि आज तक इस्लाम कायम व दायम हैं ।

आजकल जब कि हुकुमत केपास तेज से तेज जरिए आमद व रफ्त मौजूद है और काफी फौज और पोलिसे भी है लेकिन लोगो के आमाल क्यों खराब है और लोग कानून शिकनी पर क्यों आमादा है इस लिए कि उन के कलूब की इसलाह नहीं की जारही है । इसके बरअक्स जब कुरूने ऊला में मशायख उज्जाम का खानकाही निजाम जोरों पर था और चप्पे-चप्पे पर अवलिया कराम के मरकज कायम थे तो मआशरह की इस तरह इसलाह होती थी कि हर शख्स खौफे खुदा और इसार और मोहब्बत के जज्बात में आकर हुकूमते वक्त का हाथ भटा रहा था । लेकिन आज कल मआशरे की ये हालत हो गई है कि लोगो को कानून शिकनी और हुकम उदुली में मजा आता है । लिहाजा इस दौर में भी लोगो के कल्ब की इस्लाह के लिए खानकाही निजाम की सख्त जरूरत है और जहा जहा अपने महदूद अंदाज में उम्मत के बही ख्वाह इस काम में मशगूल हैं - इन पर तअन व तशनअ की बजाए इनके हाथ बटाने की जरूरत है ।

तसव्वुरे शेख

तसव्वुर बाँधकर मुर्शिद को खिलवतगीर देखेंगे,
बिठाकर रूबरू हम पीर की तसवीर देखेंगे ।

(हजरत पीर आदील)

तसव्वुर बजाते खुद रब तआला की ईजाद है । अल्लाह तआला के असमाए हुस्ना में से अल्लाह तआला का एक इस्म मुसव्विर यानी तसवीर

बनानेवाला । तसवीर बगैर तसव्वुर के मुमकिन नहीं - फरक सिर्फ इतना है के अल्लाह तआला जिस चीज का इरादा करता है पस कह देता है ।

कुन तो फयकुन ..... हो जाती है - हदीस मुबारका में आया हैं –

اِنَّ اللّٰـهَ خَلَقَ اٰدَمَ عَلٰی صُوْرَتِهٖ

तर्जुमा :- बेशक अल्लाह तआला ने आदम को अपनी सूरत पर पैदा किया।

(बरिवायते अबू हुरेरा बुखारी व मुस्लिम शरीफ

हदीस शरीफ - مَن رَاٰنِی فَقَد رَاءَ الحَقُ:

तर्जुमा : जिसने मुझे देखा पस वह हक को देखा ।

पीरे कामिल सूरत जल्ले खुदा, यानी दीदे पीर दीदे किबरिया

(हजरत मौलाना रुमी र.अ.)

हजरत मौलाना रूमी र.अ. मसनवी शरीफ में एक हदीस नकल करते है के हुजूर सय्यदे आलम स.अ.व. ने इरशाद फरमाया के खुशखबरी हो उसे जिसने मुझे देखा और उसे भी जिसने मेरे देखनेवाले को देखा । नेज आप र.अ. फरमाते हैं के जब कोई चिराग किसी दूसरी शम्मा से जला दिया गया, तो जो शख्स इस चिराग को देखेगा वह यकीनन इसी शम्मा को देखेगा। ऐसा ही एक दूसरे चिराग से अगर सौ चिराग रौशन कर दिए जाए तो आखरी चिराग को देखना गोया कि शम्मे अव्वल ही से मुलाकात करना है । इसलिए के इसकी, रोशनी शम्मए अव्वल ही की रोशनी है ।

قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی فَاَینَمَا تُولُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ

तर्जुमा : अल्लाह तआला फरमाता है तुम जिधर मुँह करो उधर अल्लाह का चेहरा है । (सूरह बकरा, आयत नं. - ११५)

अल्लाह के मकबूल, बंदो को अल्लाह का चेहरा कहा गया है । इस ऐतबार से मशायखे उज्जाम, अपने मुरीद को तसव्वुर की लाजवाल दौलत से

नवाजते हैं । अहले हकीकत में चलना जिस्म से नहीं बल्कि रूह व ख्याल से होता हैं । दूसरी बात सारे आमाल का दारोमदार नीयत व ख्याल पर हैं । हत्ता के जाहरी बंदगी भी इसी पर मुनहसिर है । इस लिए रब तआला फरमाता है - मैं तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि मेरी नजर तुम्हारे नीयत व खयाल पर होती है । इसीलिए सूफिया कराम दिल को जिकर के जरिए और खयाल को तस्व्वरे शेख के जरिये पाक कराते हैं । ताके मुरीद का जाहिर व बातिन मुसफ्फा हो जाए और इस के दिल में यार का अक्स नक्श हो जाए । ये न शिर्क है न बिद्दत बल्कि ऐन बंदगी है । जब एक बीमान की अयादत इबादत ठहरी फिर मकबूलाने खुदा के चेहरे की जियारत क्योंकर न बंदगी होगी । जो दिलो के तबीब हैं - पीर, मुरीद के बातिन में तसव्वुर के जरिए दाखिल होता है और अपना तसर्रूफ व लतायफ व अनवार व तजल्ली से मुतजल्ली कराता है । इस लिए हर मुरीद पर लाजिम है कि तसव्वुरे शेख अकीदत व मुहब्बत के साथ पीर व मुर्शिद की जात को फानी फी र्रसूल और बाकी बिल्लाह यकीन करके उसकी सूरत को हमशा अपने आइनाए खयाल में देखा करे और इस कदर यकीने कामिल हो जाए कि अपनी सूरत महू हो जाए और वही सूरते पीर की अपनी सूरत हो जाए

तसव्वुर में जब रूखे मुर्शिदे कामिल होगा,
खुद तुफान मेरे वास्ते साहिल होगा ।

(हजरत पीर आदिल)

तसव्वुरे शेख और बंदा नवाज र.अ.

हजरत ख्वाजा सय्यद मोहम्मद बंदा नवाज गेसूदराज बुलंद परवाज र.अ. अपनी किताब 'खातमा शरीफ' में लिखते हैं - पीर को दिल के अंदर तसव्वुर करे या खुद को ऐन पीर तसव्वुर करे ये नेक बख्त ही जानते हैं के ये मुराकबा नही मुकाशफा नहीं मुशहिदा नहीं बल्कि मुआएना है - यानी ऐन

बऐन हमने पीर व मुस्तफा व खुदा को एक देखा है एक जाना है ।
(खातमा शरीफ बार चहारूम, पेज नं. ९)

तसव्वुरे शेख और शाह वली अल्लाह मुहद्दिस दहेलवी र.अ.

आप अपनी किताब 'कौलुल-जमील' में फरमाते हैं के जब मुर्शिद इसके पास न होतो उस की सूरत को अपनी दोनों आँखो के दरमयान ख्याल करता रहे, बतरीके मुहब्बत और ताजीम के तो इसकी ख्याली सूरत वह फायदा देगी जो इस की सोहबत फायदा देती है ।

तसव्वुरे शेख में नमाज़

हजरत इमाम रब्बानी मुजदिद्दे अल्फे शानी शेख अहमद सरहंदी र.अ. अपने मकतूबात पेज नं. १०१२ में सवाल के जवाब में लिखते हैं के ख्वाजा मोहम्मद के जवाब में लिखते है के ख्वाजा मोहम्मद अशरफ ने निस्बते राब्ता (तसव्वुरे शेख) के मुतालिक लिखा है के इस हद तक गालिब आ चुकी है के नमाज में भी इसे अपना मसजूद जानता और देखता है - और अगर फरजन नफी करे तो मुस्तनफी नही होता - जवाब: ऐ मोहब्बत के अतरवारवाले ये दौलत तालिबाने हक के मुतमन्ना और आरजू है - हजारों में से शायद एक को नसीब होती है । इस कैफियत और मुआमलेवाला मुरीद साहिबे इस्तेदाद और नामुल मुनासिबत है - अहतमाल है के शेख मुकतदा की थोडीसी सोहबत से इस के तमाम कमालात को जज्ब करे - राब्ते (तसव्वुरे शेख) की नफी की क्या जरूरत है - क्योंकि वो मजूदे इलै (सजदे की सिम्त) है मसजूदे लहू (जिसको सज्दा कीया जाए) नहीं है - मेहराबो

और मस्जिदो की नफी क्यों नहीं करते इस किसम का जहूर सआदतमंदो को मुयस्सर आता है - ताके तमाम अहवाल में साहबे राब्ता (मुर्शिदे कामिल) को अपना जरिया जाने - और तमाम अवकात में उसकी तरफ मुतवज्जा रहें न उस बदनसीब गुरोह की तरह जो अपने आपको (तसव्वुरे शेख से) बेनियाज़ जानता है और अपने किबलाए तवज्जा को अपने शेख से फेर लेता है - अपने मामले को खराब और तबाह कर देता है - (मसलाहे तसव्वुरे शेख के मुतालिक हजरत इमामे रब्बानी तसव्वुरे शेख को किस कदर अहमियत दी है और तसव्वुरे शेख का अहतकाद न रखनेवालों को बदनसीब करार दिया है)

तसव्वुरे शेख और आला हज़रत

आला हज़रत शाह अहमद रजा खाँ बरेलवी र.अ. फरमाते हैं - खिल्वत (तन्हाई मे) आवाजों से दूर रोबा मकाने शेख (मुर्शिद के घर की तरफ मुँह करके और विसाल हो गया हो तो जिस तरफ मज़ारे शेख हो उधर मुतवज्जा बैठे महज खामोश बाअदब बाकमाले खुशू व खुजू और सूरते शेख का तसव्वुर करे और अपने आपको इसके हुजूर हाजिर जाने और ये खयाल जमाएं के सरकारे रिसालत स.अ.व. अनवार व फयूज शेख के कल्ब पर फाइज हो रहे है, मेरा कल्ब कल्बे शेख के नीचे बाहालते गदागिरी लगा हुआ है - इसमें से अनवार व फयूज उबल - उबलकर मेरे दिल में आ रहे हैं । इस वसव्वुर को बढ़ाएं यहाँ तक के जम जाए और तकल्लुफ की हाजत न रहे । इसकी इंतेहा पर सूरते शेख खुद मुत्मस्सिल होकर - मुरीद के साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और इस राह में जो मुश्किल इसे पेश आएगी इसका हल बताएगी । (वजीफातुल करीमा, पेज नं. १९)

फनाफिल शेख

फनाफिल शेख से जो भी फनाफिल्लाह होता है,
उसके दसतरस में कुदरत की कुदरत होती जाती है ।

(हजरत पीर आदिल)

हरके पीरो जाते हकरा यक न दीद, ने मुरीदो ने मुरीदो ने मुरीद ।

(हजरत मौलाना रूमी)

राहे तरीकत में मुरीद की पहली मंजिल फनाफिल शेख की मंजिल है क्योंकि शेखे कामिल फनाफिल रसूल का दरवाजा है । हजरत सय्यद ख्वाजा तवक्कल शाह अंबानवी र.अ. से किसी ने अर्ज किया हुजूर फनाफिल शेख किस कदर फायदा देता है ? आपने फरमाया दुगना और मज़ीद इरशाद फरमाया के जल्दी तो फायदा यही देता है के ये बहुत आसान और जल्दी वासिल होने का तरीका है क्योंकि जब पेशवा का तसव्वुर पुखता हो जाता है तो कमालात व तजल्लियात जो पेशवा पर बिल असलात वारिद हैं वो बावजे उसकी मुहब्बत के बिलतबा (पैरवी करने से) उसपर भी वारिद होने लगती हैं और पेशवा के साथ-साथ उसकी भी तरक्की होती जाती है – तसव्वुर को यहाँ तक पक्का करना चाहिए के तमाम हरकात व सकनात, नसिस्त व बरखास्त गरज के हर फेल में पेशवा की अदाएं आ जाएं और आखिरकार पेशवा की सूरत के मुसाबा हो जाए इसी से फिर आगे का रास्ता खुल जाता है । (तजकराये मशायखे नक्शबंदिया, पेज नं. ४६०)

मर्दो की बैत का जवाज़

हजरत अबादा बिन सामद र.अ. से रिवायत है के - "रसूल अल्लाह स.अ.व. के अतराफ गिर्दागिर्द सहाबा की एक जमात बैठी हुई थी - आप स.अ.व. ने इरशाद करमाया के तुम लोग मुझसे बैत करो के न तुम

शिर्क करोगे और न चोरी करोगे" (मुत्तफिक अलै मिशकात शरीफ)

हकीमुल उम्मत हजरत शाहू अशरफ अली थानवी र.अ. इस हदीसे पाक के जमन में तहरीर फरमाते हैं के - हदीस में तसरीह है के जिन लोगों को आप स.अ.व. ने बैत का अमर फरमाया वो सहाबा थे इससे साबित हुआ के अलावा बैते इस्लाम व जिहाद, तर्के मासी व इल्तजाम ताआत के लिए भी बैत होती थी - यही बैते तरीकत है - जो सूफिया में मामूर हैं - इसका इंकार नावाकिफी है । (अलतकशफअन मोहमातुल तसव्वुफ, पेज नं. ४०)

हजरत औफ बिन मालिक रिवायत फरमाते हैं के हम नौ या आठ या सात अफराद नबीये करीम के पास बैठे हुए थे - आप स.अ.व. ने इरशाद फरमाया के - तुम लोग रसूल अल्लाह से बैत न करोगे ? हमने फौरन अपने हाथ (बैत के लिए) आगे कर दिए और अर्ज किया के किस बात पर हम आप से बैत करें या रसूल अल्लाह स.अ.व. इरशाद फरमाया (बैत करो) इस पर के तुम अल्लाह की इबादत करोगे और शिर्क बिल्कुल नहीं करेंगे और पाँच वक्त की नमाज़े पढ़ोगे और मेरी बातें सुनोगे और मेरी अताअत करोगे और फिर धीमी आवाज में फरमाया के लोगों से कुछ नहीं माँगोगे मैंने इन (बैत करनेवालों) में से बाज को देखा के कभी इनका कुडा गिर जाता था मगर वो किसी आदमी से इसको उठाकर देनेको नहीं कहते थे (के कहीं ये अमल भी मांगने में शामिल न हो) खुद ही उठा लेते थे । (निसाइ शरीफ)

हकीमुल उम्मत हजरत अशरफ अली थानवी इस हदीसे पाक के जमन में तहरीर फरमाते हैं के - हजराते सूफिया कराम में जो बैत मामूर है जिसका हासिल मुहायदा है इल्तेजामे अहकाम व अहतमामे आमाल जाहिरी व बातिनी का जिसको उनके अरफ में बैते तरीकत कहते हैं - बाज अहले जाहिर इसको इस बिना पर बिद्दत कहते हैं के हुजूरे अकदस स.अ.व. से ये मनकूल नहीं हैं - सिर्फ काफिरों को बैते इस्लाम करना और मुसल्मानों को बैते जिहाद करना मामूल था - मगर इस हदीस शरीफ में इसका शरीय असबात मौजूद है के ये मुखातिबीन क्योंकि सहाबा हैं इसलिए ये बैत बैते इस्लाम यकीनन नहीं के तहसील हासिल लाजिम आता है और मजमून में बैत

से जाहिर है के ये बैते जिहाद भी नहीं है बल्के बदलालते अल्फाज मालूम है के इल्तेजाम व अहतमाम आमाल है, पस मकसूद साबित हो गया -

(अल तकशफ अन मोहमातुल तसव्वुफ, पेज नं. ३९९)

औरतों की बैत का जवाज़

तर्जुमा : ऐ नबी, जब तुम्हारे हुजूर मुसलमान औरतें हाजिर हो इस पर बैत करने को के अल्लाह का कुछ शरीक न ठहरायेगी और न चोरी करेगी और न बदकारी और न अपनी औलाद को कतल करेगी और न वो बोहतान लायेगी जिसे अपने हाथों और पावों के दरमयान यानी मुर्दाए विलादत में उठाई और किसी नेक बात में तुम्हारी नाफरमानी न करेगी तो इस बैत लो और अल्लाह से इनकी मगफिरत चाहो बेशक अल्लाह बखशनेवाला है मेहरबान है - (सूरह मुमतना, आयत नं. १२)

हदीसे मुबारका में है के जब सय्यदे आलम स.अ.व. रोज़े फतेह मक्का मर्दो की बैत लेकर फारिग हुए तो कोहे सफा पर औरतों से बैत लेना शुरु की - हजरत उमर र.अ. नीचे खडे हुए हुजूर का कलामे मुबारक औरतों को सुनाते जाते थे । (सही बुखारी)

कुरान मजीद व हदीसे मुबारका की रोशनी से बात वाजेह हो गई के ये बैत बैते निसवा थी । हजरत मौलाना नईमुद्दीन मुरादाबादी खजायनुल इरफान फी तफसीरूल कुरान में सूरह मुमतना की आयत १२ के तहत फरमाते हैं - बैत की कैफियत में ये भी बयान किया गया है के एक बड़ा प्याला पानी का जिसमें सय्यदे आलम स.अ.व. ने अपना दस्त मुबारक डाला फिर इसीमें औरतों ने अपने हाथ डाले - और ये भी कहा गया है के बैत कपड़े के वास्ते से ली गई और बईद नहीं के दोनों सूरते अमल में आई हों - हजरत शाह वली अल्लाह मोहद्दिस देहलवी र.अ. फरमाते हैं औरतों को बैत करने का तरीका ये है के मुर्शिद कपड़े का एक किनारा पकड़े और बैत करनेवाली

औरत दूसरा किनारा पकड़े ।

(अल कौलुल जमील शिफाउल अलील, पेज नं. ३६)

मसला : औरत बारी के दिनों में भी बैत हो सकती हैं ।

नाबालिग बच्चों की बैत का जवाज़

हजरत मौलाना शाह अब्दुल अजीज देहलवी र.अ. "कौलुल जमील" में सही मुस्लिम के हवाले से फरमाते हैं हजरत जुबैर अपने नाबालिग साहबजादे अब्दुल्लाह को रसूले अकरम स.अ.व. की हुजूरी मैं बैत के लिए हाजिर किया उस वक्त उस बच्चे की उमर सात साल या आठ साल थी । आंहजरत स.अ.व. ने उस बच्चे को अपनी तरफ मुतवज्जा फरमाकर मुस्कुराए और बैत फरमाया ।

(अलकौलुल जमील शिफाउल अलील, पेज नं. २८,२९)

मसला : एक दिन का बच्चा भी, अपने वाली की इजाजत से मुरीद हो सकता है ।(फतवाए रिजविया जिल्द १२, पेज नं. २४९)

सवाल : क्या साहबे मज़ार से बैत दुरुस्त है ?

जवाब : बेशक साहबे मजार मुंबए फैज व अनवार हैं लेकिन किसी साहिबे मजार से बैत दुरुस्त नहीं । और न किसी कामलीन ने किसी साहिबे मजार से शर्फे बैत हासिल किया । हर वली उन्हीं से मुरीद हुए जो बाजाहिर हयात थे । जैसे हुजुरे गौसे पाक हजरत अबू सईद मगजूमी और ख्वाजा गरीब नवाज र.अ. हजरत ख्वाजा उसमान हारूनी र.अ. से बैत हुए । साहिबे मजार से ईश्क व मोहब्बत कर सकता है मगर बैत नहीं । एक दफा हजरत शेखुल इस्लाम फरीदुद्दीन गंज शकर र.अ. के साहब जादे ने शेखुल इस्लाम कुतुबुद्दीन की मजार पर सर मुँढाया । (यानी बैत की नीयत से) लेकिन शेखुल इस्लाम गंज शकर ने फरमाया के हजरत ख्वाजा कुतुबुल अकताब

हमारे ख्वाजा और मखदूम है मगर ये बैत दुरुस्त नहीं है । बैत वही है के शेख का हाथ पकड़े ।

मशायखे उज्ज़ाम का कफन

मशायखे उज्ज़ाम को कीमती कफन दो

आम मुसलमानों के लिए कानूने शरा में हुकुम है के कफन अच्छा होना चाहिए यानी मर्द ईद व जुम्मा के लिए जैसा कीमती कपड़ा पहनता था । (कानून शरीयत जैसे हदीसे मुबारका में है मुर्दों को अच्छा कफन दो के वो आपस में मुलाकात करते हैं और अच्छे कफन से खुश होते हैं ।

हिकायत : एक दिन हुजूर गौस पाक र.अ. अपने एक खादिम अबुल फजल को कपड़ा खरीदने के लिए फरमाया के वो कपड़ा चाहिए जो एक अशरफी गज हो न कम न ज्यादा । खादिम कपड़ा खरीदने के लिए गया उसके दिल में खयाल गुजरा के हजरत शेख ने तो बादशाह के लिए भी कपड़ा न छोड़ा अभी उसके दिल में खयाल आया ही था के गैब से एक कील उसके पाँव में चुभ गई और ऐसी के वो मरने के करीब हो गया लोगों ने उसके निकालने की बहुत कोशिश की मगर कुछ न हो सका आखिर उसको उठाकर हजरत शेख की खिदमत में लाए आपने फरमाया के ऐ अबुल फज्ल तुमने अपने दिलमें हम पर क्यों ऐतराज किया था । परवरदिगार की कसम मैंने ये कपड़ा उस वक्त तक पहनने का इरादा नहीं किया जब तक मुझसे ये नहीं कहा गया के तुझे उस हक की कसम जो मेरा तेरे ऊपर है वो कपड़ा पहन जो एक अशरफी गज हो। ऐ अबुल फजल ये कपड़ा मय्यत का कफन है और मय्यत का कफन अच्छा होता है ये हजार मौत के बाद मिला है ।

(अखबारूल अगयार, पेज नं. २३)

सवाल : मशायखे उज्जाम को अमामे के साथ दफन करना नाजायज है ?

जवाब : अमामा शरीफ कपड़े में शामिल है और जो कपड़ा हयाती में पहनना

जायज है वो कपड़ा मरने के बाद क्योंकर नाजायज हो सकता है । बहरे कैफ मुर्दो के लिए मसनून कफन तीन कपड़े हैं और दसतार कदरे मसनून से जायद है मगर हराम नहीं जैसे दुर्रे मुख्तार में है अगर मय्यत की पैशानी या उसके अमामे या कफन पर अहदनामा लिखा जाए तो उम्मीद है के अल्लाह उसकी मगफिरत फरमायेगा और मशायख से तबरूक के तौर पर हासिलशुदा पैहरन को अगर कफन में कमीज की जहग इस्तेमाल में लाए तो उसकी गुंजाइश है । शोहदा कराम के कपड़े ही इनके कफन हैं - जैसे हजरत सिद्दीके अकबर ने वसीयत की थी - के मुझे मेरे इन दोनों कपड़ों में ही कफन देना ।

शजरख्वानीके फवायद

१) हुजूर अकरम स.अ.व. तक वसीला हैं ।

२) सालीहीन का जिक्र बाईसे नुजूले रहमत हैं ।

३) नाम ब नाम अपने बुर्जुगो को एहसाले सवाब पहुँचाना बाइसे नजरे इनायत हैं ।

४) जब शजरा पढ़नेवाला अवकाते मुसीबत में उन बुर्जुगो का नाम लेगा वो उसकी दस्तगीरी करेंगे । लिहाजा हर मुरीदे सादिक को अपना शजराए मुबारका बाद नमाजे फजर तिलावत करना चाहिए या किसी भी वक्त पढ़ना चाहिए और इसके फजाइल और बरकात हासिल करे ।

"हिदायत : शजराए मुबारका कब्रों में रखने से तिलावत करना बेहतर हैं ।"

असरारे खुदी

(किताब)

असरारे खुदी किताब में चौदह मुकत्तियात का खुलासा, आदम, हव्वा, जन्नत, दोज़ख, गंदुम व गंजे मख्फी के असरार, इस्मे मोहम्मद का राज, काबा व संगे अस्वद के क्या मानी, नूर की हकीकत व शैतान की मारफत, मिजाने अन्फास किसे कहते हैं, मन अरफ के तकरीबन रमूज इस किताब में मौजूद हैं ।

ये किताब खानखाहे मारूफिया में बगैर उजरत के दी जाती है मगर साहिबे समझ ही इस किताब के हकदार होंगे ।

अहले सिलसिला पीर फेहमी मदज्जलाहु ल आली के खिदमात

- ★ कलमा तय्यब का तुगरा
- ★ शशजहत का तुगरा
- ★ आईनाए मारूफ कलामों का मजमुआ (उर्दू)
- ★ आईनाए मारूफ कलामों का मजमुआ (हिंदी)

तस्नीफात

★ नुरूलईमान (उर्दु) ★ पीरे कामिल (उर्दु) ★ पीरे कामिल (हिंदी)

बयाने मारूफ

इर्फानी बयानों की V.C.D. केसीटें

१) तसव्वुफ	२) मारफत	३) सफरे बातिन (अव्वल)	४) सफरे बातिन (दुव्वम)
५) नुर व जुलमात	६) तालिबे मौला	७) शबे मेराज	८) गंजे मखफी
९) बैते हकीकी	१०) तखलीके आदम (अव्वल)	११) तखलीके आदम (दुव्वम)	१२) तखलीके आदम (सुव्वम)
१३) राजे मोहम्मदी	१४) फना बका	१५) सुते सरमदी	वगैरा

खाकपाए पीर फेहमी ख्वाजा शेख मोहम्मद फारूक शाह कादरी
अल चिश्ती इफ्तेखारी मारूफ पीर अफी अन्हु

पता : भगतसिंग नगर नं. १, मस्जिद तयबा के मुकाबिल, लिंक रोड, गोरेगांव (वेस्ट), मुंबई - १०४.

मोबाईल : **09324 832490** फोन नं. : **022-32439857**

Computer Composing & Printing : Decent Art, Mob : 9867914724, 022-64180700